हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड

गद्य पाठ योजना

प्राध्यापक / प्रधानाचार्य – रमेश कैन्दल **कक्षा – बारहवीं**

विषय – हिन्दी (आधार) **उपविषय – गद्य**

प्रकरण – शिरीष के फूल़ **समय – 40 मिनट**

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, काकौत (कैथल)।

अधिगम प्रतिफल :–

1 विद्यार्थियों के सामान्य एवं व्यवाहरिक ज्ञान में वृद्धि करना।

2 विद्यार्थियों को पाठ को जानने व समझने के योग्य बनाना।

3 विद्यार्थियों में तर्क–शक्ति की क्षमता को विकसित करना।

4 विद्यार्थियों को विविध गद्य शैलियों से परिचित कराना।

5 विद्यार्थियों के भाषा ज्ञान को समृद्ध बनाना।

6 विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना।

अधिगम **उद्देश्य** :– विद्यार्थियों में ' हजारी प्रसाद द्विवेदी ' द्वारा रचित निबंध **शिरीष के फूल** नामक पाठ से परिचित कराना।

ज्ञानात्मक :– 1 छात्रों को फूलों के महत्त्व से अवगत करवाना।

2 कम आंके जाने वाले **शिरीष के फूल** की विशेषता बताना।

3 निबंध में वर्णित मुख्य बिन्दुओं को आत्मसात करना।

बोधात्मक :– 1 **शिरीष के फूल** नामक निबंध की मुख्य विषयवस्तु को समझकर उद्देश्य को स्पष्ट करना।

2 अनेक कवियों व लेखकों के फूलों के प्रति भिन्न – भिन्न विचारों को जानना।

प्रयोगात्मक :–

1 निबंध से मिली शिक्षा पर अमल कर अपने दैनिक जीवन से जोड़कर देखना।

2 पाठ का सार अपने शब्दों में लिखना।

कौशलात्मक :– 1 स्वयं गद्य विधाओं को लिखने की क्षमता में विकास करना।

2 निबंध में आए कार्यालयी शैली में परिवर्तन के विभिन्न उपायों का व्यवाहाकि ज्ञान प्राप्त करना।

अधिगम संसाधन :– श्यामपट्ट , चॉक , संकेतक , झाड़न आदि।

विशिष्ट अधिगम संसाधन :– समार्ट क्लास रुम , कार्यालयी शैली से युक्त चित्र , ऑडियो , विडियो और पी॰ पी॰ टी॰ आदि।

शिक्षण विधि :– सार कथन , विश्लेषण , व्याख्या , प्रश्नोत्तर , अर्थ ज्ञान के साथ समीक्षा विधि।

अनुमानित पूर्व ज्ञान :–

1 सामान्यतः विद्यार्थियों का फूलों के बारे में जो ज्ञान है, उसके बारे में जाना जाएगा।

2 फलदार , छायादार और फूलदार वृक्षों की भिन्नता जानी जाएगी।

3 मानव के साथ पेड़ों और फूलों के संबंध पर चर्चा की जाएगी।

पूर्वज्ञान परीक्षण :–

अध्यापक क्रिया	छात्र– क्रिया
आप कभी किसी अच्छे व बड़े उद्यान में गए हैं।	हाँ जी
आपने बगीचे में कौन–कौन से फूल देखे ?	छात्र विभिन्न फूलों के नाम बताएंगे।
छोटे–छोटे पोधों के साथ ,क्या आपने बड़े पेड़ पर भी फूल लगे हुए देखे हैं।	छात्रों के अनेक उत्तर आएंगे।
आपमें से शिरीष के फूल किस– किस ने देखे और उनके बारे में क्या जानते हो?	छात्रों से कुछ सकारात्मक उत्तर संभावित ।

उद्देश्य कथन :– प्यारे विद्यार्थियो ! आज हम **शिरीष के फूल नामक पाठ को पढ़ेंगे। शिरीष के फूल** विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यशील एवं कर्त्तव्यशील कैसे बना रहा जा सकता है, जानने का प्रयास करेंगे।

प्रस्तुतीकरणः–

इस निबंध में लेखक ने शिरीष के पेड़ व उसके फूल के माध्यम से लंबे समय से अपने स्थान पर जमे राजनैतिक लोगों पर कटाक्ष किया है। इसके साथ –साथ वनस्पति शास्त्र का ज्ञान दिया है ।

शिरीष का पेड़ व उसके फूल

शिक्षण बिन्दु	अध्यापक क्रिया	छात्र– क्रिया	श्यामपट्ट काय
लेखक जानकारी	जन्म – 1907 मृत्यु – 1979 रचनाएं – अशोक के फूल, कल्पलता , अनामदास का पोथा आदि। ये निबंध व्यक्तित्व – व्यंजना और आत्मपरक शैली से युक्त	लेखक से जुड़ी मुख्य जानकारी कापी में लिखेंगे।	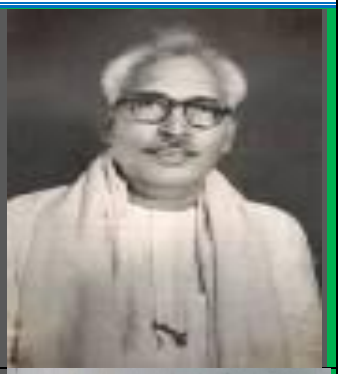
सार	इस निबंध में लेखक ने शिरीष का पेड़ व उसके फूल के माध्यम से वनस्पति शास्त्र का ज्ञान दिया है । इसके साथ शिरीष का पेड़ आँधी ,लू और भीषण गर्मी की प्रचंडता में भी अवधूत की तरह अविचल होकर अपने कोमल पुष्पों का सौंदर्य बिखेर कर विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यशील एवं कर्त्तव्यशील की विशेषता को बताया है।	**छात्र अध्यापक की बात को ध्यान से सुनेंगे और समझेंगे।**	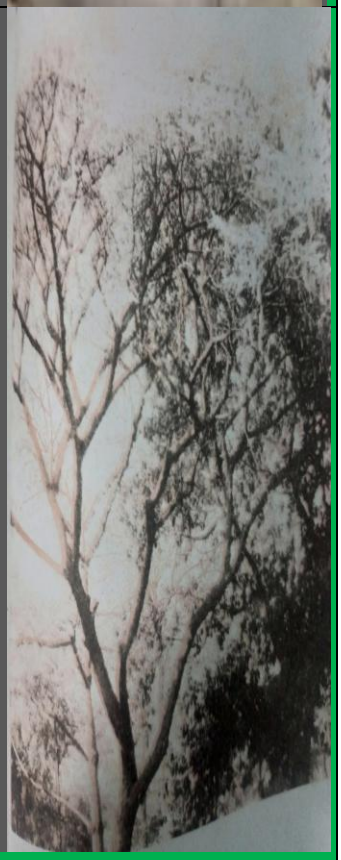
आदर्श वाचन	**इसके फल इतने मजबूत – –– –जमे रहते हैं ।** इस गद्यांश को पहले आदर्श वाचन करके पढ़ा जाएगा। फिर इसका सरलीकरण करके विद्यार्थियों को समझाया जाएगा। गद्यांश से बहुविकल्पीय प्रश्न बनाकर दिखाएं जाएग।	विद्यार्थी इस गद्यांश का मौन वाचन करेंगे। इसके बाद बहुविकल्पीय प्रश्न बनाएंगे।	**शिरीष के फूल** कर्णिकार – कनेर हिल्लोल – लहर कृषीवल – किसान कार्पण्य – कंजूस उन्मुक्त – द्वंद्व रहित

अनुकरण वाचन	छात्रों से इस गद्यांश का अनुकरणीय वाचन करने को कहा जाएगा।	बारी –बारी सभी छात्र पाठ का अनुकरणीय वाचन करेंगे।	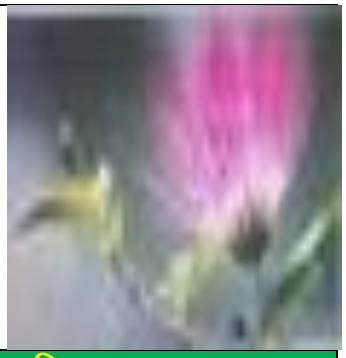
अशुद्धि संशोधन	पाठ के अनुकरण वाचन के समय की गई अशुद्धियों को छात्रों की सहायता से श्यामपट्ट पर शुद्ध करवाया जाएगा।	छात्र निर्देशानुसार शब्दों का शुद्ध उच्चारण करेंगे।	**कठिन उच्चारण व वर्तनी वाले शब्द –** **प्रज्ञता** **परिवेष्टित** **घनमसृण** **निर्दलित** **अभ्रभेदी**
व्याख्या	सभी गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या की जाएगी। भाषा – सौंदर्य की जानकारी दी जाएगी। 1 वसंत के आगमन – – – – – तक जमे रहते हैं। 2 मैं सोचता हूं – – – – – – – निश्चित है। 3 कालिदास सौंदर्य – – – – – – समाप्त नही है।	छात्र पाठ के अध्यापक द्वारा किए गए सरलीकरण को ध्यान से सुनेगें और उसे समझने का प्रयास करेंगे।	**प्रसंग–** **व्याख्या–** **विशेष–**
कठिन शब्द	**कठिन शब्दों के अर्थों को समझाया जाएगा।**	शब्दार्थ अभ्यास– पुस्तिका में लिखना।	**कठिन शब्दों के अर्थ –** **खंखड़ – ठूंठ/शुष्क** **घनमसृण –** **घना–चिकना** **दोला – झूला** **अनाविल – स्वच्छ** **कार्पण्य–कृपणता** **निर्दलित – भलीभांति निचोड़ा हुआ।** **पुन्नाग– एक बड़ा सदाबहार पेड़**

व्याकरणीय ज्ञान	निबंध में आए शब्दों का व्याकरण जैसे – समास , संधि , वाक्य शोधन आदि।	छात्र व्याकरण से जुड़े शब्दों को छांटकर अभ्यास–पुस्तिका मे लिखेंगे।	दाए–बाएँ में द्वंद्व समास – दाए और बाएँ कालाग्नि में दीर्घ संधि – काल + अग्नि राजोद्यान – राज + उद्यान = गुण संधि
बहुविकल्पीय प्रश्न	1 शिरीष की डाल़ कैसी होती है ? क मजबूत ख कमजोर ग कठोर घ सख्त	अध्यापक के निर्देश के अनुसार छात्र ग्रुपों में बंटकर इस प्रकार गद्यांशों में से ज्यादा से ज्यादा बहुविकल्पीय प्रश्न तैयार करेंगे।	1 'बकूल ' का अर्थ है– क पीपल ख मौलसिरी ग रीठा घ नीम उत्तर – मौलसिरी
बोधात्मक व विश्लेषणात्मक प्रश्न	1 ' **शिरीष के फूल** ' पाठ का मूलभाव या उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। 2 लेखक को यह क्यों लगता है कि शिरीष एक अद्भुत अवदूत है? 3 ' हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी–कभी जरूरी हो जाती है – पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।	छात्र प्रश्नों के उत्तर कापी में लिखकर व समझकर तैयार करेंगे।	
कठिनाई निवारण	प्राध्यापक विद्यार्थियों की पाठ से संबंधित समस्याएं लेंगे।	छात्र अपनी कठिनाइयां दूर करेगें। जैसे– 1 पेड़ के आकार के बारे में बताना सर। 2 इसके पत्ते कैसे होते हैं ,सर आदि	शिरीष के पेड़ का आकार – विशाल पत्ते – छोटे – छोटे फूलों में पंखड़ियों की जगह रेशे–रेशे हाते हैं।

पुनरावृत्ति –

1 **शिरीष के फूल** पाठ गद्य की कौन–सी विधा है ?

2 ' **शिरीष के फूल** ' पाठ के लेखक हैं।

3 **शिरीष के पुष्प को शीतपुष्प क्यों कहा जाता है ?**

4 **शिरीष के फूल** कौन–से इलाके के वृक्ष हैं?

गृह – कार्य :-

1 पाठ का सही उच्चारण के साथ उच्च स्वर मे पठन करना।

2 पाठ के अभ्यास **के प्रश्न** करना।

3 पाठ में आए कठिन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करना।

4 **पाठ के गद्यांशों में से बहुविकल्पीय प्रश्न तैयार करना।**